Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

ISSN 2319-8648 | Impact Factor - 7.139 | Indexed (SJIF)

May 2020 Special Issue- 27 Vol. 1

RADIANCE

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Editor
Dr. Sunita Sangole
Dayanand College of Arts, Latur

Special Issue 27 , Vol. 1 | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
May 2020 | SJIF | Impact Factor : 7.139

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REFREED & INDEXED JOURNAL

SPECIAL ISSUE – 27 Vol. 1 , RADIANCE

Editor - Dr. Sunita Sangole

© All rights reserved with the College & publisher Price : Rs. 400/-

Chief Editor – Arun Godam
Latur

Published BY
Shaurya Publication
Old MIDC , Near Kirti Gold Chowk, Latur
Email- hitechresearch11@gmail.com , 8149668999

Printed By.
Shaurya Offset
Old MIDC , Near Kirti Gold Chowk, Latur
Email- hitechresearch11@gmail.com

EDITION : May 2020

पर्यावरण व्यवस्थापन व पर्यावरण संरक्षण कायदे 103
प्रा. दिवे वैशाली माधवराव माधवर

मनस्वास्थ्य आणि संगीत 106
डॉ संदीपान जगदाळे

महाराष्ट्रातील उपक्रमशील शाळा 109
प्रा. ईश्वर राठोड

. राष्ट्रीय पत्रकारिता के दीपस्तंभ: माखनलाल चतुर्वेदी 112
डॉ वनिता कशिनाथप्पा आग्रे-पटवारी

. Nutritional problems in Rural Community of Latur Districts children. 115
Vijaykumar Govindrao Birajdar

. भाषिक कौशल्ये : व्यक्तिमत्व विकासाची गुरुकिल्ली 120
प्रा. राजकुमार मोरे

. बालकामगार समस्या : प्रकार, कारणे आणि दुष्परिणाम एक समाजशास्त्रीय अभ्यास 124
सोनटक्के रमेश शंकरराव

3. राजर्षी शाहू महाराजांच्या सामाजिक प्रशासनाचे प्रारुप 130
डॉ. शिवशंकर कसबे

CURRENT GLOBAL REVIEWER
Special Issue 27 , Vol. 1 | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
May 2020 | SJIF | Impact Factor : 7.139

राष्ट्रीय पत्रकारिता के दीपस्तंभ: माखनलाल चतुर्वेदी

डॉ वनिता कशिनाथप्पा आग्रे-पटवारी
दयानंद कला महाविद्यालय,लातूर

आज का युग पत्रकारिता का युग माना जाता है. यह लोकतांत्रिक भारत जैसे देश मे इसका स्थान और भी महत्वपूर्ण और व्यापक है. जनमत और जनदृष्टीकोण को प्रकट करने का यह सर्वोकृष्ट माध्यम है. पत्रकारिता शासक और शासित के बीच एक कडी है. जो समाज और एवं राष्ट्र को प्रेरणादायी एवं पथ दर्शक भी सिध्द् हुआ. भारतीय पत्रकार प्रधानत: हिंदी व क्षेत्रिय भाषाओ के पत्रकार अपनी राष्ट्रीयता या देशभक्ति के लिए बडे विख्यात थे . भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में उन्होने अपूर्व त्याग तथा बलिदान दिया है.देश की स्वाधिनता के लिए संघर्षतथा रष्ट्रीयता का प्रचार करना वे पुनीत कर्तव्य मनते थे.आरंभ से ही हिंदी पत्रकारिता अपने ऊचे आदर्शो का पालन करती आ रही है. सदा से ही रष्ट्रीयता उसका स्वर रहा है और स्वरुप सार्वदेशिक. राष्ट्रीय सम्मान और मर्यादा की रक्षा के लिए पत्रकारोंने अनेक कष्ट और यातनाएं सही पर वे अपने कर्तव्य से विचलित नही हुए.भारतीय पत्रकारोंने पत्रकारिता के मानदंड सदैव ऊंचा बनाए रखा है.

राष्ट्रऔर पत्रकरिता दोनो स्वतंत्र शब्द है.जिनके मेल से एक महान शक्ति उद्भूत होकर राष्ट्रीयपत्रकारिता का स्वरुप धारण करती है.जो साहित्य में स्वर और सूर बनकर फ़ूट पड्ती है. जन मानस में सामुहिक चेतना का निर्माण होता है. देश भक्ति का रुप धारण कर लेता है,जिसमें व्यक्ती के लिए स्वत्व से लेकर राष्ट्र तथा देश के स्वतंत्रता ओर सम्पन्ता की सुरक्षा के लिए सर्वस्व-समर्पण तक के भाव समाहित होते है.अत: राष्ट्रीय पत्रकारिता में सामाविष्ट राष्ट्र और पत्रकारिता इन दोनो शब्दों का स्वंतत्र रुप से विचार किया जाना आवश्यक हो जाता है. राष्ट्र यह संकल्पना आधुनीक नही है. राष्ट्र शब्द का उल्लेख अर्थववेद में भी इसका उल्लेख मिलता है."राजानो वै राष्ट्रभृतस्ते हि राष्ट्राणी बिभ्रति "1 इस उल्लेख से राष्ट्र की सकंल्पना प्राचीन है ,जिसके अंतर्गत भूमि ,उसकी सुरक्षा,सम्पन्ता के लिए आवश्यक राजा एवं प्रजा की जिम्मेदारियोंका विस्तृत विवेचन मिलता है.

राष्ट्र शब्द की भॉती राष्ट्रीयता का स्वरुप भी प्राचीन ग्रंथो में विविध रुपों में स्पष्ट किया गया है. राष्ट्रीयता का संबंध बाह्य ना होकर आतंरिक अनुभूती से होता है.यह सामुहीक भावधारा होती है. राष्ट्रीयता के कारण समाज में स्नेहशीलता निर्माण होती है. मनुष्य के जीवन में राष्ट्रीयता की भावना प्रबल शक्ती बन गई है. "राष्ट्रीयता एक निर्मल और पुनीत भाव है,जिसमें देशानुराग सदैव प्राणवान रहता है.२ भारत में राष्ट्रीयता का जन्म भारतीय तथा ब्रिटीशों के स्वार्थो के संघर्ष के फलस्वरुप हुआ था.इसे पत्रकारिताने और तीव्र बनाया,साथ में राष्ट्रीयता और भी उग्र होती गई.

हिंदी पत्रकारिता में भारतेंन्दुजी का महत्वपुर्ण स्थान रहा .पत्रकारिता पर उनकी छाप दिखाई देती है. भारतेंन्दु की पत्रकरिताने जनता का दिल जीत लिया. उन्होने स्वदेशी आदोंलन का सुत्रपात किया भारतीय अस्मिता की प्रथम आभिव्यक्ती भारतेंदु में होती है. इसी युग के पत्रों में राष्ट्रीयता के भावना की झलक मिलती है.व्दिवेदी युग में राष्ट्रीवादी विचारधारा और भी तेज होती गई. इनके सम्पादकत्व का यह प्रताप था की देश भर के हिन्दी सेवी और कलमकार उनके साथ जुड गए. बाबू मैथिलीशरण गुप्त,प्रसाद,महदेवी वर्मा , माखनलाल चतुर्वेदी,प्रेमचंद ,गणेश शंकर विद्यार्थी,रामकुमार वर्मा आदि सरस्वती के मुख्य लेखक बन गए. स्वदेश प्रेम को लेकर यह युग उपयोगी रहा.३

गांधी युगीन पत्रकारिता का युग राष्ट्रीयता के साथ प्रारंभ हुआ. गांधी युग की यह विशेषता रही है.ठिक उसी तरह माखनलाल चतुर्वेदीजी के विचारोंपर भी गांधीजी के विचारोंका प्रभाव दिखाइ देता है. माखनलाल चतुर्वेदीजी के प्रभा,कर्मवीर,प्रताप प्रमुख पत्र थे.इन पत्रो केव्दारा माखनलाल चतुर्वेदीजी ने राष्ट्रीय विचारो को हवाले कर दिए . उनके समुचे साहित्य में राष्ट्रीयता का स्वर हमेशा उँचा रहा. अपनी कर्मवीर पत्रिका के संदर्भ में वह कहते है,"मैं ऐसा पत्र निकालना चाहूँगा कि जिससे ब्रिटीश शासक चलते चलते थक जाए." ४ उनके इन विचारों से स्वाधिनता आन्दोंलन को बढावा मिला.

था.उन्होने स्वयमं तो लिखा साथ ही दुसरो को भी लिखने के लिए प्रेरित किया. वे एक निर्भीक,कर्मठ पत्रकार के रुप में ज्ञा विचार स्वातंत्र,बौध्दीक ,प्रखरतावाद और क्रांतिचेतना का उन्मेश हुआ. पत्रकारिता देशसेवा के लिए हो यह उनका मुलमंत्र अपने जीवन के लगभग ३५ वर्ष निर्भीक,तप:पूत और जुझारु पत्रकारिता को नि:शेष भाव से समर्पीत कर दिए थे. शौर्य और पराक्रम से युक्त पत्रकारिता की परंपरा में माखनलाल जी का नाम आदर के साथ लिया जाता है.

इस प्रकर हम यह कह सकते है की माखनलाल चतुर्वेदी जी की पत्रकारिता में राष्ट्रीयता भरी हुई है.स्पष्ट है की राष्ट्रीय निराकार होते हुए भी केवल अनुभुत है,उसमे व्याप्त भावनात्मक ,आध्यात्मक एवं मनोवैज्ञानिक शक्ति इतनी प्रबल एवं तीव्र है वह सामान्य जन से लेकर सम्पूर्ण राष्ट्र अथवा विश्व उसकी सीमा में आनेवाले प्रत्येक बौध्दिक प्राणी पर अपना प्रभाव छोडे बि नही रह्ती.

निष्कर्ष रुप में ह्म यह कह सकते हौ की,माखनलाल चतुर्वेदी जी की पत्रकारिता में राष्ट्रीयता कुठ कुठ भरी थी.उनके पत्रकारि का और सहित्य का मुख्य प्राण तत्व भी राष्ट्रीयता ही है.स्वाधीनता आंदोलन को उनकी पत्रकारिता की मदत मिलती गई. माखनलाल चतुर्वेदी जी के साहित्य में भी राष्ट्रीयता का स्वर ऊंचा दिखाई देता है.प्रभा प्रताप कर्मवीर पत्रो ने राष्ट्रीय जनजा जो कार्य किया है वह महत्वपूर्ण था.

संदर्भ

१.माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली खंड ३ सं. जोशी श्रीकांत , वाणी प्रकाशन ,कमला नगर , दिल्ली
२. डॉचौरेजगदिशचंद्र - माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य का अनुशीलन
३.मिश्र कृष्णबिहरी- हिंदी पत्रकारिता
४. जैन रमेशकुमार -हिंदी पत्रकारिता का आलोचनात्मक इतिहास
५. डॉराय सुजाता हिंदी पत्रकारिता और राष्ट्रीय जागरण
६. .माखनलाल चतुर्वेदी रचनावली खंड 5 सं. जोशी श्रीकांत , वाणी प्रकाशन ,कमला नगर , दिल्ली
७. डॉशर्मा कृष्णदेव .माखनलाल चतुर्वेदी : व्यक्तीत्व एवं कृतित्व
८. ऋषी जैमिनी कौशिक बरुआ - .माखनलाल चतुर्वेदी जीवनी

Current Global Reviewer

Indexed (SJIF)

ISSN 2319-8648

Impact Factor- 7.139

Chief Editor
Arun B. Godam
Latur, Dist. Latur-413512
(Maharashtra, India)
Mob. 8149668999

Publisher
Shaurya Publication

Jointly Organized

Rajarshi Shahu Mahavidyalaya, Latur (Autonomous)

Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded &

Lions Family, Latur

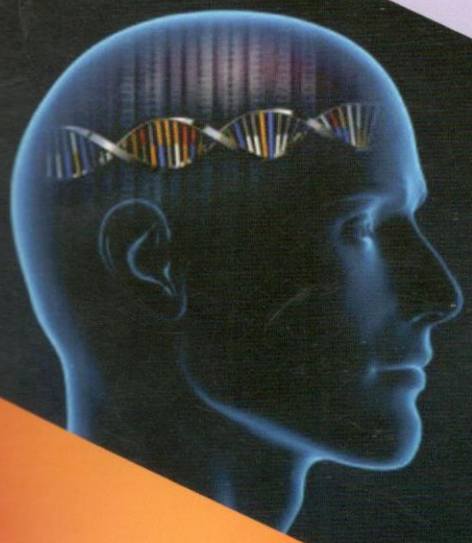

"New Dimensions in Higher Education"

One Day National Open Forum (Seminar)

16th Oct. 2018

Chief Editor
Dr. Mahadev Gavhane

Editor
Ln. Prof. Shivshankar Patwari
Dr. A. J. Raju
Dr. E. U. Masumdar

Rajarshi Shahu Mahavidyalaya, Latur (Autonomous)

Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded &
Lions Family, Latur

Edited Book of Contributed Papers Published in
National Open Forum

"New Dimensions in Higher Education"

Chief Editor
Dr. Mahadev Gavhane

Publisher
Principal, Rajarshi Shahu Mahavidyalaya, Latur (Autonomous)

ISBN 978-93-5240-194-9

Aruna Prakashan, Latur
103, Omkar Complex - A, Khardekar Stop,
Ausa Road, Latur. Mo. 9421486935

© All rights reserved

First Editon : 16 October 2018

Offset : Arty Offest, Latur

DTP : Aruna Prakashan & RK Graphics, Latur

Cover Page Design : Ln. Prof. Shivshankar Patwari

INDEX

EDITORIAL

All Committee Members

1. Indian Education System : Challenges and opportunities - **Dr. Pandit Vidyasagar**
2. Higher Education in India: New Challenges - **Prof. Dr. Deelip G. Mhaisekar**
3. New Trends In Higher Education - **Prof. Dr. Sudhir Gavhane**
4. Autonomy in Higher Education: A New Dimension - **Dr. (Smt.) M. M. Fadnavis**
5. भारतातील कृषी शिक्षण : सद्यस्थिती आणि भविष्यातील दिशा - **डॉ. अशोक ढवण**
6. The Concept of Excellence in Higher Education - **Dr. Mahadev Gavhane**
7. Academic Autonomy: A Quality Initiative in Higher Education - **Dr. Shridhar D. Salunke**
8. Massive Open Online Courses (MOOCs) – A New Dimension in Higher Education - **Dr. A. J. Raju**
9. E- Learning: Added Dimension in Higher Education - **Dr. E. U. Masumdar**
10. Reform Higher Education In India by Forming a Common Higher Education Authority - **Prof. Madhav Shelke, Shri.Balaji Masalge, Prof. Nitin Panchal**
11. Higher Education Scenario in Maharashtra: Privatization of Medical Education - **Dr. Priti Pohekar**
12. Technology Enhanced Learning in Indian Higher Education - **Renuka R. Londhe**
13. Higher education in India; challenges and opportunities - **Dr. Ravikumar B. Shinde**
14. Higher Education Reforms: Academic Autonomy to Higher Educational Institutes - **Dr. Mahadev H. Gavhane, Abhijit A. Yadav**
15. Skill Based Education- New Dimensions In Higher Education In India - **Dr. Prakash Ratanlal Rodiya**
16. MOOC : A New Dimension of Higher Education In India - **Dr. Sachin D Bhandare, Dr. Chandrashekhar A. Dawane**
17. Significance of IQAC for Enhancement of Quality Education - **Dr. K.W. Gutte**
18. Emerging Trends of Higher Education in India - **Dr. Anuja Jadhav**
19. Challenges in implementing autonomy in higher education - **K. D.Savant, M.S.Wavre**
20. The Higher Education Scenario in Marathwada and its regional dilemma. - **K. S. Raut, D. S. Rathod, V. S. Shembekar**
21. Recent trends Impacting Higher Education - **Dr. Kiran Dande**
22. Learning – A journey from traditional to smart classrooms - **D. V. Vedpathak, S. N. Shinde, O. V. Shahapurkar**
23. ICT in Higher Educational Institution - **Mr. Panchal. V. D.**
24. Higher Education in India: Challenges, Opportunities and Suggestions - **Dr. Pushpalata Gopal Kawale**
25. उच्च शिक्षणाची बदलती धोरणे आणि विकासाकडे वाटचाल - **प्रा.डॉ.नरसिंह कदम**
26. भारतातील उच्च शिक्षणाची आजची स्थिती - **डॉ. पंजाब चव्हाण, प्रा.सय्यद आ.आर.**
27. Ebooks In Higher Education: For Quality Enhancement - **Dr. S.J. Kulkarni**
28. Communication Skill New Dimension of Higher Education - **Dr. Babasaheb M. Gore**
29. Intercultural Dimension of Language Study - **Sachin M. Kale**
30. उच्च शिक्षा में नये पहलूओं के साथ बदलाव जरुरी - **डॉ.वनिता आग्रे-पटवारी**
31. Enhancing Employability Through Placements In Higher Education - **Mr. Rahul M.Athawale**

+ + +

उच्च शिक्षा में नये पहलूओं के साथ बदलाव जरुरी

डॉ.वनिता आग्रे-पटवारी

भारत सदियोंसे विश्व का उच्च स्तर शिक्षा के अध्ययन का प्रमुख केंद्र रहा है । वह नालंदा तथा तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयोंके स्वरूप में दिखायी देते है। शिक्षा चाहे धर्म, संस्कृती, आचार-विचार अर्थ-व्यवहार या इनसे अलग विषयोंमे क्यों ना हो, भारत में इन सभी शिक्षा दिक्षा का प्रसार हमें हमारे इतिहास में दिखाइ देता है। देश पर करिब ८०० सौं से अधिक सालों से अलग-अलग सांस्कृतीक आक्रमण होते रहे इसके बावजूद भी हम अपना वजूद कायम रखने में सफल रहे। मगर अंग्रेजोंकी हुकुमत ने हमारे बहूत सारे क्षेत्रों को प्रभावीत किया इन्ही में से एक क्षेत्र शिक्षा का भी था। अग्रेंज अधिकरी मेकाले द्वारा भारत में नई शिक्षा निती की नींव रखी गई और आधुनिक शिक्षा का दौर आरंभ हुआ।यह नई शिक्षा निती अंग्रजोंके फायदे की जरुर थी, मगर आज के इस दौर में इस शिक्षा ने हमारे समक्ष कई समस्याएँ उत्पन्न की हैं। इसलिए हमें आज इस शिक्षा निती के बारे जरुर विचार करना पड रहा हैं।

समुचे देश में सभी प्रकार की और सभी स्तर की शिक्षा आसनी से मिलने लगी हैं। फिर भी इस शिक्षा संबंधी अलग अलग विचार समाज के सम्मुख उपस्थित होते रहे हैं। संचार माध्यमों और संचार की नई तकनिक ने जीवन के सभी पहलूओं कों जिस तरह प्रभावीत किया है उसी तरह शिक्षा क्षेत्र को भी प्रभावी बनाया हैं। इंटरनेट तथा समाज माध्यमों के साथ साथ सभी आधुनिक उपकरणों का उपयोग अध्यापन कार्य में किया जा रहा हैं। पश्चिमी देशों के साथ साथ भारत में भी अध्यापन कार्य हेतू दूरचित्रवाणी तथा रेडिओ के कार्यक्रमों का प्रसारण पॉडकॉस्टींग द्वारा की जाने लगी हैं। इसके परिणाम स्वरूप उच्च शिक्षा के अंतर्गत अनेक साधनों का उपयोग किया जा रहा है। उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अध्ययन कार्य अधिक रोचक बनाने की कोशिश भी जाने लगी है। एकसाथ सभी तरह के बदलाव इस क्षेत्र में भी जाने लगे है। मगर फिर भी आधुनिक शिक्षाद्वारा हम शिक्षीत तो हो चुके मगर इस शिक्षा के द्वारा हमारे कौशल्यों को विकास नही हो पाया हमें सिर्फ किताबी बातें पता चली जो हम हमारे जीवन में उपयोगीता के कसोटी पर खरी नही हो पा रही है। हमारी शिक्षा निती में बदल की संभवता बठ गयी है। इसलिए कुच्च शिक्षा के नए आयामों पर विचार करना और भी जरूरी हो गया है।

समय के साथ बदलाव लंबे अरसे से हमारी शिक्षा निती एक समान रही है। शिक्षा संबंधी नितीयोंमे समयानुसार बदल होना अनिवार्य था मगर यह हो न सका। इसलिए आज की शिक्षा पद्धती ७० सालों से भी पुराणी हो गयी है। इस पुराणी शिक्षा के परंपराओं को बदल कर आधुनिक तांत्रीक तथा विद्यार्थीओं को गुणवत्ता के साथ साथ कौशल्य विकास भी जरूरी बन गया है। आज का छात्र अपने ज्ञान से रोजगार पाने में पुरी तरह से सक्षम नही है। उसे रोजगार की दिशा में सक्षम बनाकर सामाजिक मुल्यों की शिक्षा दिक्षा से सामाजिक विकासमें योगदान देणे लायक बनाना होगा। आज के विद्यार्थी उच्च शिक्षा और अनुसंधान के क्षेत्र को उदासिनता से देखते हैं। उनका अनुसंधान रोजगारमें वृद्धी नही करते या उन्हे रोजगार दिलाने में सहाय्यक साबित नही होते। इसलिए देश में अनुसंधान या उच्च शिक्षा के और आने वालों की तादात बहोत ही सिमीत है।

विद्यार्थी और अध्यापक दोनों के बीच का फासला कम तो हो गया। लेकीन अध्ययन अध्यापन का दायरा वैश्विक बन गया। आज हम अध्ययन के साथ साथ शोध छात्र बनना पसंद करते है। या फिर प्रोजेक्ट के आधार पर अध्ययन करना अच्छा लगता है। इन सभी पैलूयों पर जरूर विचार होना चाहिये की हमें छात्रों को कहा तक सही रास्ता दिखा रहे हैं।

उच्च शिक्षा से तंत्रशिक्षा के छात्रों को विदेशों में अच्छे रोजगार के अवसर मिलते है। लेकीन यह स्थिती सभी विषयों के बारे में लागू नही भी जा सकता । इसे बखते हेतू

हमें शिक्षा के इन पहलूओं पर गौर करना पडेगा आज भी स्थिती में असरदार सखीत हो सकेंगे। जिनके उच्च शिक्षा रोजगार दिखाने में सक्षम हो, जो छात्र और सामाजिक विकास में सश्योभी बने और सामाजिक दायित्व को समझ सके। हमारे छात्रों को दो तरह से तैयार करना होगा। एक तो उन्हे अच्छे रोजगार के अवसर मिले तथा दुसरा बौद्धिक, सामाजिक, सांस्कृतिक दायित्वोंको अच्छी तरह से निभा सके।

स्वंतत्रता के समय उच्च शिक्षा के अंतर्गत को स्थितीयों थी उनमें बडा अंतर आया है। इस अंतर को समझे बीना हमें अध्ययन-अध्यापन क्षेत्रों में नये आयामों के बारे में नही कह सकते क्योंकि शिक्षा निरंतर चलनेवाली प्रक्रिया मानी जाती है। शिक्षा में नये आयाम जोडने है तो हमे लोकसंख्या की बडोतरी के साथ तांत्रीक तथा नये विचारोंको संम्मिलित करके वैश्विक प्रभाओंको आकना होगा। विकास कि परिभाषा शाश्वत के साथ और सामाजिकता के साथ जोडकर निरंतरता बनाई रखनी होगी ।

आज का दौर ब्राँड का दौर माना जाता है। शिक्षा के क्षेत्र में भी निजी संस्थाओं द्वारा अपनी अलग पहचान बनाकर अपना अलग स्थान निर्माण किया जा रहा है। इन संस्थाओं में उच्च शिक्षा के अंतर्गत जितने भी नये पहलु संम्मेलित किये जा सकते है उनको शामिल किया जा रहा है। इन संस्थाओं द्वारा शिक्षा में गुणवत्ता लाने के प्रयास दिखाई देते है मगर इन संस्थाओं से आम तौर पर सामान्य विद्यार्थीओंको दुर रहना पडता है। क्योंकी यहा कि शिक्षा आर्थिक स्तर पर भी उच्ची रहती है। जहाँ इंटरनेट ज्ञान के विस्फोट का साधन बन चुका है वहा उच्च शिक्षा के छात्र अभितक यह तय नही कर पा रहे है की सही क्या और गलत क्या । इस असमंजस की स्थिती से उभरने के लिए नये शिक्षा में नई आयामों का जुडना जरूरी बन गया है। नयी शिक्षा निती नये सिद्धांतो के साथ नये माध्यमों के जरीये शुरू की गयी तो यह सामान्य से सामान्य छात्र के लिए भी कारगर साबित होगा इसलिए अब यह जरूरी और अनिवार्य सा बन गया है की, उच्च शिक्षा अब और नई तकनिक से दुर नही रह सकती ।

हमने बदलते परिवेश को ध्यान में रखकर शिक्षा के आयामों का विचार अभी नही किया तो समाज और पीछे जायेगा समाज की विकासोन्मुक दिशा और दशा नही बदल सकती । हमारे जो भी विकास संबंधी उद्देश हो उसे पाना असंभव सा हो जाएगा । एक तरफ हजारो साल की सांस्कृतीक धरोवर को संरक्षीत कर विकास के नये आयाम उसमें जोडने होंगे जो बदलते मुल्यों का विचार अच्छि शिक्षा में तब्दिल हो सके तो छात्र अपनी जिम्मेवारी के साथ साथ सामाजिक जिम्मेवारी को भी अच्छी तरह से निभा पाएँगे । आज की उच्च शिक्षा में सांस्कृतिक धरोवर ना के बराबर मानी जाती है इसी परीनामवश सामाजिक मुल्यों का अवमुल्यण का आरोप लगाया जा रहा है। तो दुसरी तरफ बेरोजगारी की समस्या लगातार बनी हुई है । ऐसी समस्याओं से उच्च शिक्षा से मुक्ती दिलाने हेतु हमें आधुनिक तंत्र, रोगार का मंत्र और कौशल्य विकास की धारा को विकसीत करना अनिवार्य लगता है।

एक तरफ वैश्विकीकरण और तांत्रीक बदलाव के साथ दुरस्थ शिक्षा, श्राव्य और दृकश्राव्य माध्यमों का उपयोग, इंटरनेट के जरीये ई अध्यापन कार्य हो रहा है। वही हम आज भी उन्ही पुराणी परंपराओं के साथ जुडे हुऐ है। कोठारी आयोग में शिक्षा की निती संबंधी कहा था आने वाले समय में हमें दुरस्थ शिक्षा को ध्यान में रखते हुऐ इसके विकास पर ध्यान देना जरूरी है। दुर दराज के अध्ययन कर्ता इसका लाभ उठाकर अपना जीवन संभाल सके। ठीक उसी तरह शिक्षा का केंद्र अध्यापकों के केंद्र में आ चुका है। इसे हटाकर हमें अध्ययन कर्ताओं के केंद्र में लाना जरूरी है। ताकी हम शिक्षा द्वारा अध्ययन कर्ताओं में रुची, अभिरुची उत्पन्न कर उन्हे शोध कार्यमय ला सकेंगे । शिक्षा से सक्षमता आना आनिवार्य है । अध्ययन और अध्यापन कार्य में संवाद कौशल्य, सुनने की क्षमता समश्याओं का निराकरण तथा विषय वस्तू की गहराई बहुत ही महत्त्वपूर्ण होती है। इस पैलुओं पर भी ध्यान देना अनिवार्य होगा।

+++

ISBN 978-93-5240-194-9
978-93-5240-194-9

Aruna Prakashan, Latur
103, Omkar Complex-A, Khardekar Stop,
Ausa Road, Latur 413512 Mob. 9421486935